

DPN 6749

Title : भागवत महापुराण BHĀṢAVATA MAHĀPURĀṆA
अमरकोष^व AMARA KOSA

Run. No. 7474

Cat. No.

Micro. No.

Subject पुराण Purāṇa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. / नेपाल भाषा: ^१ इति अमरकोषम्
Newa meaning in Amar Kosa text.

Size in cms. 32 x 9.4

Folios 65 Lines (in a page) 10

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / Skandha 10th

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /
severely

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / Fungus

Beginning, colophon, post-colophon :

20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

30

3



[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 उक्तं महर्षिः ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible][illegible]

ध्वजकस्य तस्मात्तावित्तानकद्वन्द्वः। यावत्कालं स्थितिः। यद्यप्यद्यत्कालं मृत्युः इति मनायाः
 कल्पेलादयः। यद्यसौ न निवर्तते नायत्तात्कालिदिति न। यद्यद्यमृत्युः कृतान्मानयत्कालं मम। सुता
 जायते न मृत्युः कृतान्मानयत्कालं मम। विषयथावाकिन्त्या इति द्वावपि वदन्। उच्यते नानि वक्तुं न निवर्तते पुनरादि
 ततः। अथ यथादाव विद्यागयागया उच्यते नान्यत्र निमित्तमस्ति। एवं हि ईश्वर इति वदन्। गवीरसंथागवि
 र्गो विषयकयः। मनसा ह यमन न युक्तं स न वीरः। न च स्यात्कृत्यं सोम्य यदा गाथा गवीरसंथागवि
 धियाः स्यात्कृत्यं स मूर्तिर्न। क उवाच॥ सुहृद्वान्निवर्तते कस्य कदा कस्य विद्वत्। वसुधैवा कुटुम्बकम्
 कस्य विद्वत्कृत्यं। अथ काल उच्यते कृत्यं दवकी सद्यदिवत्। यज्ञान्सा सृष्ट्व वाक्षो कं यो वै वाचवत्सवः॥ को हि
 पृथग्मर्त्यं सायानकद्वन्द्वः। अथ यामास कृत्यं साऽनृणां दानि विहृतः। किन्दु कृत्यं साधुना सिद्धं किमर्थं
 केन वा यत्कृत्यं दयाणां कृत्यं कृत्यं तात्मनाः। दृष्ट्वा न मत्वा कृत्यं सत्यं वेदयत्वा कृत्यं॥ कस्य सुखं मनः पादः

[illegible]

[illegible][illegible]

यि विष्णोः सा रूपा नाम मरुतयकं ब्रह्मा विवर्णं गता एतन्मनश्चानकदं दृशः ॥ सा विष्णुत्पोषं धाम राजमाना यथा यविष्णुः
दस्य सदाद्वि सहायुतानां सवयुधकः ॥ ततो जगत्संगलमश्नुतां शीं समाहितः ध्रुवसूतं नदवी ॥ दधौ सवोत्तमकमा
त्महृत्काष्ठं यथानन्दकवमानस्तः ॥ सादवकी सर्वजगन्निवास निवासयुक्तानि तत्रानेक ॥ सा ऊर्ध्वलक्ष्मि शिषि
वन्द्या सवस्वकी ह्यनखलं यथा सती ॥ ताम्नीश्वरीं सः परुषाजितान्कर्वा विधावयन्ती कवने ॥ विशिष्टा ॥ योगे यमया
नेन च लभ्यते ॥ कुर्वन्निष्ठा यन्नुयुधयमीदृशी ॥ किमद्य तस्मिन्कवणीयमाशु मया यत्तत्तानदिह निविशमः ॥ स सगुर्व
मया वक्ष्यामि ॥ यगः धियं रुद्रानुकालमायुः ॥ स नयजीव नखलसम्यग्भा यर्कतया ह्येकं नृशं गितन ॥ गेदमृत्त
मनुजाः ॥ यन्निगता तमात्रक नृमानिना ॥ कवः ॥ ॐ निधाय तमोद्गादोत्तमिह रुः स्वयम्युः ॥ आत्मयती दी रुजन्मद
नयसा नववधकः ॥ आसीनः समिधं लिखन् रुद्रानः यद्यदन्तयिवन् ॥ चिकमानो हृषीकेशं मयस्थलं यद्युगता
॥ वक्रा रुद्रं न के ॥ मुनिरिन्द्रादि लिखि देवैः सानुवयः ॥ सार्कगीर्द्धिगामी उयन् ॥ सत्यवतं सत्यं देवान् सत्यं
सत्यं यथा निदिशुः सत्यं सत्यं सत्या मृगसत्यं नृपं सत्यात्तकं तां गयन् ॥ यन्ना ॥ नवायः ॥ सो द्विरुत्तमिह

[illegible]

सत्यस्यथानिद्रिक्तं सत्यं सत्यं सत्यामृतं सत्यं नृणां सत्यात्कं तां गन्तुं यत्रा ॥ प्रकायः आसौ द्विरुत्तमः

5

10

15

20

2.5

30

3

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

[illegible]

कट, गज

१ अ इ का लु ग्रा त वा यथा ॥ यस्यामुकहृदि स्था स्यात् सर्वं घात्यां ला कवन्दिनेऽं अं यस्या समावा य ॥ १ ॥ यत्र यि
न ॥ सा उवा चापि सा स्वर्गमवायुजननी गतिः ॥ क क न क ल न द्या ना ॥ किं न गा वा नू मा त र ॥ य यो सि या सा म ॥ य यं
क सृ ता न्य ले ॥ रु ग वा न द व की य ॥ ५३ के व ल्या द्य स्त्रि ला र्थे द ॥ न पू न ४ क ल्य न ना ऊ न सं सा था ॥ लू न स म्र व ४ क ६ ॥ यो र
यं स व द्या य व जी क सं ४ ॥ कि मि दं क न प्र व ति व द न ॥ य ज मा य य ४ ॥ त त व व क्ति त स्त्रा ये ४ पू न ना ग म ना दि क ॥ ५४ ॥ यो र
ना र्थ स्त्रि गि ल म्भा र्थं स वि स्मि ता ४ ॥ न द ४ स्र पु ष मा दा य था वा ग त उ दा न वी ४ ॥ मु र्धा या द्या य य व मा म्प दं ले रं ४ ॥ य
न न्यु त ना मा दं क ल्प था र्थं क म रु त ॥ नि ग मा गु ष्ठ या म ल्हा ला वि न्द ल रु म र्ति ॥ ५५ ॥ ५६ ति श्री रा ग व त म रु य वा ॥ द
ग म र्थं ल्य पु न ना वि मा रु ४ य ४ ॥ ५७ ॥ ५८ क उ वा च ॥ य र्थं स व द्ये वि क्ते न्द र्ण रु ज ना र्हे न ४ ॥ क र्त्तु र्नि ग म नं
दं ला य ना नां स था पि ता ॥ वि क्ते ना त उ वा च ॥ य न थ ना व ता व ॥ रु ग वा न रु वि री थ व ४ क र्त्तु र्नि क र्त्तु र्नि म ना र्ति न व
बु र्ता ॥ य रु थ ना ॥ ये ल्य व ति व्ति ल्प ॥ स ल्प ४ ५७ ५८ ५९ ॥ य वि य र्थं स ४ ॥ रु क्ति दे यो त ल्य र्थं स र्थं ॥ द व रु व स्र द म ॥ स र्थं
॥ अ था य द यि क क स्य ता का व रि क म रु त ॥ मा न र्थं ला क मा सा द्य त र्त्ता ति स न र्थं ४ ॥ वा द या य वि रु वा च ॥ क दा वि द्ये कानि
व की रु का ल ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
य वि रु त ५

20

15

10

5

0

कृष्ण वक्रणा २

कथ्यानातिविधा ६

कायक ४

माव ८१

निजं नययधर्ममनसि न । रुजसखनवकिं किरी ८ समा जलरुहाननं चावदभय ॥ एतत्तद्विनायकपदयेन कृपावादान्गुणीनिक
 र्गन । रुजिरुपायिर्नययधर्मजं शेषकवयून ८ द्वा द्विहृदय ॥ मधुगामागिरावकुवाद्यया नयमनाहयायुक्कवकण विधिकरीविमावी
 यमकम । नयनसीधुनादाययस्वन ८ ॥ नयकथासुमनस्यजीवर्न कविरिरीतिर्नकल्पयायह । एवणमं गल्लंशिमदातन रुविगुणनियद
 विदाजना मायहसिर्न पिययमवादिर्न विहवदधर्मनथानममल । नहसिर्न विदायाद्विदिस ८ ॥ कुह नामन ८ कुरुयानि ॥

कृष्ण वक्रणा

Handwritten text in Devanagari script, likely a continuation of the previous page.

[illegible]

[illegible][illegible]

10

ת

सूयं यद्वदशा यथः क वालि जिह्वा सुसिना यलावनः। नं ना श्वेयुः सनि वस्य मन्त्र मा न्यवष्टव लामध सुदना सनः। यद्वद
सूयं नरि वस्य विवाः क धान क द्वाः सन मृग विक्रमः। सूयं यद्वद शा ति रु नः कालि या नी व वि कलः। रु दं वि वं कालि या रु द ग म्
दूरा सदः। न के क द्वा व रं ग वृत्ता रु द्वा मी शि नः। नि वा वि नः सा रु वि ना य स द्वा वि ना रु व न ॥ मी नी शु द्वा वि ना न्द द्वा दी ना मी न य
तो क नं। क य या सी रु विः या रु न क ल दं म मा व न ॥ गू द्वा वि श्वा ग वृत्ता यदि म ल्या स खो द नि। स द्वा पो ले वि य द्वा न स ल्य म न्द
वी म्द ॥ न कालि यः य वं द ना यः क म्ध न लं नि रु द्वा श्वा सी रु वृत्ता दी नः द्वा म्ध न व वि वा सि नः। क र्क रु द्वा दि नि क्का नी दि श्वा स म्ध
वा स सः। म द्वा म पि ग वा की ल्द द्वा न द य वि रु दं। ड य ल थ। क्ति ताः स वृ ल व यो वा रु वा स व श य मा द नि रु ना त्मा ना ला याः यी त्या ति व रि
॥ य ल्द द्वा रु नी न द्वा ला या गा व श्वा व न। क र्क स म्ध ल वृत्ता सा ल व म ना व थ। वा म श्वा श्वा म ल्ति य द्वा सा स्या न्द व वि ना
यु म्द न दं क मा वा य य न द्वा न रु द्वा क न ॥ गा वा वृत्ता स व ल्द ल ति व य र मा म द श न न्द वि वाः स मा ग म्ध गु व वः स क ल वृत्ता। ड वृत्ता
ल लिय ग म्ध। दि श्वा म्क रु वा ल्म द्वा य ल्द द्वा व म द्वा गा न द्वा ल वृत्ता स ती ॥ य वि श्वा क्क मा वा य म्मा वा क्क ली म्द रु द्वा नी ना दि न रु वा
न रु द्वा स म्ध व रि नः। ड वृत्ता क्क सा गा व कालि द्वा ड य ल ल नः। न द्वा शु वि वि ना रु ना द्वा वा ग्निः स वृ ना व द्वा। सूर्य नि नी थ य
ग य द्वा म्ध य व क म। न न ड द्वा य र्क ना द्वा म्ध ना वृत्ता क सः। क र्क य द्वा म्ध ना वृत्ता मा या म न्द मी श्वा व ॥ क र्क द्वा म्ध ना वृत्ता ग्निः।

॥ मन्त्रविक्रमः ॥ नवदा वनवावक्रिस्त्रावका नगसन्निधिनः ॥ सुदसुनात्वा नृपादिका लाला ॥ सुददशयः ॥ नगक्रमस्तु वरुणस्य वक्रु
॥ नकासयः ॥ ॐ स्वज्ञनवेलाय निवीक्ष्य दगदीश्वरः ॥ नमसि मयि वली वमननानन नगकिष्टक ॥ ॐ तिशी रागवत मद्र
॥ दशमस्तु ॥ दावाय मोक्षं सदा दद्यात् ॥ ॥ शुक्र उवाच ॥ अथ कुरु ॥ यविच नालाति रिमोदि नालाति ॥ मरिष्य नः
गायमाना च वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ वक्रु विकीरुता ॥ ॥ वरुणाया लक्ष्मणे मायया ॥ गायाना मरु वरु वना किथयानगनी
॥ सवददा वनगुणैर्वसनं वलक्षितं ॥ यथा मरु गवासा द्वादामं मरुके गवः ॥ ययनि मरु निदा दनिष्ट लखन मिलिक्
॥ मरु लक्ष्मी क वक्रु य म मरु य मरु ॥ सवित् सवत्यश्वत्थामि वायुना कला वक्रु ॥ अत्यल वक्रु ॥ विष्णो न विद्यते य न वना कसा
॥ नवानि दाय वक्रु कुरुवाति ॥ दलं ॥ अगाधनायक दिनी गदा मिदि देवत्यनीयाः ॥ पुलिने समनक नयन वक्रु ॥ शुक्र यविधात्वना
वानसं गा दलितं दिष्टकं ॥ वनं कसुमिर्गं मनुदक्षिणं मरुदिष्टं ॥ गायन मयु न मरु वक्रु ॥ को किल साज सः ॥ कीयिष्य
माण लक्ष्मी ॥ रमता च लस्य नः ॥ वरुण विचय नगा धेनु धने ॥ सवतो विगत ॥ पवाल वक्रु वक्रु ॥ गवा वक्रु न वक्रु ॥ ॥
॥ मरु कला दया ॥ गायान नृ नृय ये ॥ उक्रु ॥ कलस्य नृय नः ॥ के विक्रु ॥ कविद वा दय न ॥ वक्रु पाणि तुले ॥ ॥ युगं सुव
थाय व ॥ गायनाति पाणि कृता दवा ॥ गायाल वक्रु ॥ ॥ वक्रु वक्रु ॥ मरु न दा वक्रु वनं नृय ॥ मरु लिले नः ॥ के य वक्रु

10

ת

ॐ यकारवर्द्धं च र्जं वृमन् ॥ गालायालेर्द्धं नार्द्धं सवल ४ पाविशद्विषायेन वामं दगामि न्य ड्वा तावप्युयसा ॥ ययर्द्धं गवनाद्गनाद्
 नं पीत्यान्नं ननी ॥ वनोक्तसंयमुदितावननाजीमधुक्तं ॥ जलधारागिरिवावादासज्ञाददृश्यादृश्याद्विद्वन्त्यनिकांशुगुण
 याश्चातिवद ॥ नावृशं रुगवानभेकं दमुलरुलाशनं ४ दध्यादनमयानीर्गिलायागलितानिकी ॥ सर्वज्ञानीयैर्वृद्धं लायैः
 सकषणां नृनं ॥ गदलायविसमिग्यं चर्वनामीलिनं रुपां न ॥ दृष्टानृष्टानवत्सनानगाश्चश्वाश्वाकृवशमा ४ पावृट्शिय
 नयौ च सर्वश्रुतसूखावेका ॥ रुगवानपुत्रयावका आत्मशब्दे यवृदिना १ नेर्वनिवसनी नस्मिन्नामके गवथावृद्धं ॥ सेवत्सम
 सवह ॥ काखर्द्धं वृद्धं वृष्टानिला ॥ शवदानं च द्रात्यत्यानीरागियुक्तं यय ४ ॥ रुद्रानामिवयर्मासियुनयागनिधवया ॥ आशु
 र्यगवल् ॥ दुवः यक् मयोमर्ल ॥ १ ॥ वृद्धं रागामिणीं हृत्तुं कथं ४ ॥ सर्वस्वीकृतदादिवादिन ४ ॥ स्ववृद्धसं ॥ यथ
 यकषणां ॥ कामनया मुक्तकलाया ॥ गिरथाममयुक्तं कविभूममवः गिर ॥ यथाकृन्नामृत्कालं कृन्नानिनाददन् नवा ॥ नेवा
 विदन् द्रीयमाणं जलं गाधजलं वना ॥ यथायुववृद्धं दीर्घं नवा मृदा ४ ॥ रुद्रमिन ४ ॥ गाधवाविदवात्मायमविन्दुन गवदके ४ ॥ १ ॥
 ४ विद ४ ॥ कथं ४ ॥ कृद्दं विजिनं न्दिय ४ ॥ १ ने ४ ॥ ने ४ ॥ यकं रुला न्यामधवी र्व ४ ॥ यथादममनीवीया ४ ॥ गीवादिस्वनात्मसु ॥
 वलायवदृष्टं ससूद ४ ॥ रदागम ॥ आत्मन्यय वनं सम्यग्मूर्तिर्न्यय वनागम ४ ॥ केदावत्यस्तु यगृद्धं कर्षकादृदसं ४ ॥

[illegible][illegible][illegible][illegible]

[illegible]

वशिष्टयुगैविवस्मात्त

ह्याजिताऽश्वत्थं च वृक्षं मासीति ॥ उपरुसिताऽमर्त्यं च वृक्षं मासीति ॥

[illegible]

न संयमः यन्निवसन्नागा निरुद्यागकृताग्रमान् ॥ तदरिहूयिरुगवान् सद्योत्सासवदग्निः ॥ यद्युयावनताः यच्छुद्धवान् च
 यद्यगमान् ॥ कथं नमिपितृकाः यं सद्योमावडयागनः ॥ किंरुलकस्यवाद्यं ॥ ४० ॥ नवासाधनमखः ॥ ४१ ॥ तद्वह्निमहाकामा मर्त्यसु
 घवयितुं नहिगायानि साधुना कृत्यं सर्वोत्तमनामिह ॥ अस्मत्पुत्रदृष्टीना ममितादासु विद्विषा ॥ उदामीना विद्वद्भू आत्मवत्सु दृ
 चत ॥ कृत्वा कृत्वा च कर्मणि जनायमनूतिवत् ॥ विद्वद्वक्त्रममिद्विद्वत् ॥ यथाना विद्वद्धारुवत् ॥ तद्वत्तव क्रियायाणा रुवती कि
 विया विनः ॥ अथवा लोकि वसन् यच्छुद्धमाधुर्यता ॥ नन्दगायडवाव ॥ यच्छुद्धा रुगवानिन्द्रा मद्यासु स्यात्समूर्त्य ॥ ४२ ॥ शिववर्नि
 तगता जीवन् जीवन् यय ॥ ४३ ॥ तानवयमय च वामे कर्मणि मीध्वनः ॥ उद्यो सुदुतसा सिद्धे यजक कुरुनिर्वा ॥ ४४ ॥ तच्छ्रुत्वा प्रजावः
 किं विवर्तते ललुतव ॥ यंसंयमवकावाणा यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ यजतं विस्तुज्जुद्धमं मार्यययगर्तनः ॥ ४५ ॥ कामात्ता रुया द्विधा
 त्वेनासादिना रुनः ॥ ४६ ॥ दानाय लिबुवाव ॥ वृत्तानि शासनं च तथा मया वृत्तकसा ॥ ४७ ॥ यमन्यजनचन पितृवस्य हकगवः
 ॥ ४८ ॥ ननु वा ॥ कर्मणा जायत कुरु ॥ कर्मलो वृत्तयत् ॥ मूर्खदृष्ट्यं रुयं कर्म कर्मलो वारिपुत्र ॥ अस्मिन् दीप्त्यं कश्चिद्वत्
 ॥ ४९ ॥ कर्तुं रुजतसा यि नम्रकुरु ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ किमिदुल्लुहतानां स्वस्वीकर्मो न वलिना ॥ अनीला नान्यथा क
 ॥ ५० ॥ स्वराव विद्विषा ॥ ५१ ॥ स्वराव गेडा लिजनः स्वराव मनवर्तन ॥ स्वराव कर्मिदं सर्वं सदवा सूनानूषः ॥ ५२ ॥ दहानुवाव वा नुजकु

॥ ५३ ॥ जकिरुता ॥ गुरुमिंजमुदासीनः कर्मविगुवृत्ती ॥ ५४ ॥ तस्मात्संयुज्यत्कर्म स्वरावः ॥ ५५ ॥ अस्मिन् साधनवर्तन
 ॥ ५६ ॥ मजीवो कर्तव्यं यच्छुद्धा मयं जीवति ॥ नतस्माद्विद्वत्कर्म जावन्तार्यं मनीषया ॥ ५७ ॥ वर्तन वृत्तणा विद्या राज
 ॥ ५८ ॥ ममदा रुया जीव कुडमु द्विजसं वया ॥ ५९ ॥ दानिवा लिङ्गमावर्त कसीदं रुयं मयं न ॥ ६० ॥ वालो वृद्धि विद्या रुत व
 ॥ ६१ ॥ यथा ॥ सत्त्वं रुजसु मरुति क्लियत्यलुन रुतवः ॥ रुजसा त्वयत विद्वत् मन्थानां विविधजगत् ॥ ६२ ॥ रुजः सत्त्वादिना मय
 ॥ ६३ ॥ वरुणा विनः ॥ ६४ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ मरुदुष्ट किं कविषाति ॥ ननः ॥ ६५ ॥ यजतं नगा मान गृहावय ॥ ६६ ॥ वमो कससा ननि र्व
 ॥ ६७ ॥ नगा लनिवा विनः ॥ ६८ ॥ तस्माद्वर्वा वृत्ताना मद्यश्चावयतां मखः ॥ ६९ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७० ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७१ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७२ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७३ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७४ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७५ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७६ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७७ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७८ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ७९ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८० ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८१ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८२ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८३ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८४ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८५ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८६ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८७ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८८ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ८९ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९० ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९१ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९२ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९३ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९४ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९५ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९६ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९७ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९८ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ ९९ ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥ १०० ॥ यच्छुद्धा रुलरावनः ॥

यत्समर्थे ११

हतायवर्मगवा॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
र्य॥ सदिजागिष॥ कृष्णस्य नमस्तुभ्यं॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
मरुवकं नमनात्मन॥ अहोयस्य तलोलाः सोऽव्ययीनाः नृपुणं वधात्॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
स्याम॥ मर्मोऽहोत्तमा गवा॥ ॐ ह्यदिगा विजमरुं वासुवद्वयादिना॥ यथाविधायगायासः सरुहकवर्जयय॥ ०॥
ॐ गिणी रागवर्ममहायुवापेदमस्काच॥ ॐ ह्यमखरुह्युक्तुर्गिणी तमाः धाय॥ ॥ शुक्रदवाच ॥ ॐ ह्यसदात्मनः पूजा
विरुयविरुचं नृप॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
वाक्यमहानान्युत॥ अहोत्तमा गवा॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
धातुं रुद्रो मनीनिरे॥ विद्यामाध्वकिं कौहिला॥ निगीर्षकिरुवाधुव॥ वाचालं वालिगं सद्धं मरुम्यलितमानिन॥ कर्म्म मरुम्यपात्रिः
स एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
नृप॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
॥ कलमसाव॥ पीठयामासुवाजसा॥ विद्यालुमानातिधुकि॥ सुनरु॥ सुनयितु॥ रि॥ गीर्वर्मवृत्तलीवृत्ताववर्ष॥ कलमसाव॥ पीठयामासुवाजसा॥ विद्यालुमानातिधुकि॥ सुनरु॥ सुनयितु॥ रि॥ गीर्वर्मवृत्तलीवृत्ताववर्ष॥
॥ ॐ नमस्तुभ्यं॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥
॥ ॐ नमस्तुभ्यं॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥ एताधनानियुक्तस्य गिरि शक्यपदकिं॥ अनोस्मान्द्रुकाणि तवाद्रुक्खलं कृता॥

॥ शुक्रवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धनकविः ॥ १० ॥ दयावा दयः कुदः

द्वन्द्वलनं ॥ यथा दृष्टेऽवमोमयेऽ

कृत्यादिभूतमानिना कृत्यमल्लमयाद्यः

ममूत्रयदमदयनामूत्रधवावतनी
ममूत्रयदमदयनामूत्रधवावतनी

विमर्शकलेन वा वदथ हितं माकृता

५ नीयर्था २ ५ लापला १

न० मया ३

यासावाकवाक्यं वा जातव्यं न ॥

यमानाङ्गवतठपादमूलनूपाययुष्ठा
मिदिवाहनदनामानामयुष्ठा

तस्मात्तु विद्यानां यववर्षेति । तज्ज

कानां सूत्राणां मीमांसा विस्मयः ॥ मलाः ॥

सथागने साः यमैव न सुहितशा॥६॥

धानं गीष्मं दुःस्थितं वृद्धं कस्यैव

यथा मन्त्राणां विना देवैर्देवाः तथैव यथा मन्त्राणां विना देवैर्देवाः

ककुलसं कल्पः शान्तिः शान्तिः

त्यज नृणां संगो याऽसकृद्वनङ्गिकाः।

25 30

25 30

अनन्दिता ४१

[illegible]

सा २

लिकुल द्विज दृष्टमिति प्रियाः ॥ ४ ॥ मालादगिव ४ कवि नलिकजा नैयुषिक ॥ ५ ॥ जिनयनया ४ कनस्य (गन) माधव ॥ ६ ॥ चूत प्रिया
लयनसामल कोविदाव ॥ ७ ॥ जम्बूद्विज वकुला मुकदम्बनीया ॥ ८ ॥ अथ न्यायार्थरुविकायम् ॥ ९ ॥ यकृत्ता ४ ॥ संतुष्टक यदवी विहितान्मना ४ ॥
किन्तु कर्तुं किति तथा वगैर्यादीनि स्यान्मात्रात्तालजिता कर्तुं विनामि ॥ १० ॥ अथ किमस्य वद ॥ मविक्रमाद्वा ॥ ११ ॥ कावचारुवयय ४ यत्रिभ्रमण ॥
अथाप्यत्र प्रगण ३ प्रियथरगाव ४ सुचन्द्रां मदि पुनिर्वृतिमश्नुताव ४ कान्ता स मकुच कुच मवज्जिताया ४ कुच ४ ४ कलपन विरुवाति गन्ध
॥ वादं प्रियां गडयथा चरुहीत रश्मा वमान ४ सुलसिका निवृत्त मदीये ४ ॥ अथ यमान ४ ४ वरु वद ४ ४ यणामं विरु क्तिन च निच वन्युणया वलावि ४ ॥
युक्तमालकादाह नया ॥ १२ ॥ स्यत ४ ४ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ विजयत्युलकाच ४ ॥ १३ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ १४ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ १५ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥
वगैर्यादीनि स्यान्मात्रात्तालजिता कर्तुं विनामि ॥ १६ ॥ अथ किमस्य वद ॥ मविक्रमाद्वा ॥ १७ ॥ कावचारुवयय ४ यत्रिभ्रमण ॥
अथाप्यत्र प्रगण ३ प्रियथरगाव ४ सुचन्द्रां मदि पुनिर्वृतिमश्नुताव ४ कान्ता स मकुच कुच मवज्जिताया ४ कुच ४ ४ कलपन विरुवाति गन्ध
॥ वादं प्रियां गडयथा चरुहीत रश्मा वमान ४ सुलसिका निवृत्त मदीये ४ ॥ अथ यमान ४ ४ वरु वद ४ ४ यणामं विरु क्तिन च निच वन्युणया वलावि ४ ॥
युक्तमालकादाह नया ॥ १२ ॥ स्यत ४ ४ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ विजयत्युलकाच ४ ॥ १३ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ १४ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ १५ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥
वगैर्यादीनि स्यान्मात्रात्तालजिता कर्तुं विनामि ॥ १६ ॥ अथ किमस्य वद ॥ मविक्रमाद्वा ॥ १७ ॥ कावचारुवयय ४ यत्रिभ्रमण ॥
अथाप्यत्र प्रगण ३ प्रियथरगाव ४ सुचन्द्रां मदि पुनिर्वृतिमश्नुताव ४ कान्ता स मकुच कुच मवज्जिताया ४ कुच ४ ४ कलपन विरुवाति गन्ध
॥ वादं प्रियां गडयथा चरुहीत रश्मा वमान ४ सुलसिका निवृत्त मदीये ४ ॥ अथ यमान ४ ४ वरु वद ४ ४ यणामं विरु क्तिन च निच वन्युणया वलावि ४ ॥
युक्तमालकादाह नया ॥ १२ ॥ स्यत ४ ४ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ विजयत्युलकाच ४ ॥ १३ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ १४ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥ १५ ॥ नूनकत्ववज्जिता ४ ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]

三

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

20

15

10

यधिपत्नीसकुलादना ॥ १ ॥ खरा ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

का २

षाधगणगत्रमूलपडुत्रिकत्यपिना कर्वनापियाला ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

5

0

5

10

15

20

25

30

[illegible][illegible]

दुर्गा ३

॥विष्णुर्वाधो कनारायथ मारुदत्तमुखाय ॥ सुमेधाय विष्णुर्वाधुः ॥ निरुदत्तः स्वायम्भुवः ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

